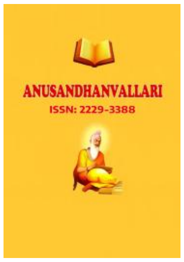

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

अनामिका के साहित्य की विशेषताएँ

[1]प्रीति यादव, [2]डॉ. धनेश कुमार मीणा

[1]शोधार्थी

सहायक प्राध्यापक

[2]शोध सुपरवाइजर

विषय- हिन्दी, कला विभाग

मंगलायतन विश्वविध्यालय, बेसवाँ, अलीग़ढ़

उत्तर प्रदेश, भारत

कठिन शब्द-

यथार्थवादी, समीकरण, सांप्रदायिक विमर्श, प्रतिपादन, आत्मकथात्मक वर्णनीय, परिस्थिति विमर्श, समीकरण, अभिव्यक्ति, संयोजकता, परिपूर्ण, वर्चस्व, मौलिकता, अमानुषिक, वर्चस्व, परिपूर्ण, प्रवृत्ति, विसंगतियाँ , बौद्धिक परिष्कार, आत्मकथात्मक वर्णनीय, स्वार्थहितता, संकीर्णताओं ।

परिचय-

समकालीन कविताओं की पृष्टभूमि ही यथार्थवादी रही है। समाज के वास्तविकताओं को लेकर चलने वाली कविता ही समकालीन कविता की श्रेणी में आती है। अपने आस-पास के परिवेश को लेकर चलना का काम ही समकालीन कविता की आधार बिन्दु है। पूर्ण रूप से आँखों देखी सच्ची तस्वीर ही इस समय की रचनाओं का आधार बिन्दु रहा है। ये रचनाएं आज के परिवेश, समय और समाज से जुड़ी हुई हैं। अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों की कहानी का स्पष्ट प्रमाण है विसंगतियाँ आज कल की सामाजिक परिस्थितियाँ जटिल से जटिल बनती जा रही है। समाज में हर तरफ असुरक्षा, अजनबीपन, एकाकीपन, अस्तित्व पर खतरा, राजनीतिक विसंगतियाँ आदि परिवेश ने हमारे सामने एक जटिल स्थिति पैदा कर दिया है। मूल्य संकट भी भ्रष्ट परिस्थितियों के सामने एक नए रूप में, एक नए प्रश्न के साथ खड़ी हैं जो आदर्शों की दीवारों को गिरा दे रही हैं। समकालीन रचनाएँ ही इन्हीं अमानवीय अत्याचारों के खिलाफ अपनी आवाज़ को बुलंद की हुई है। आज का समाज अर्थ को ही मुख्य मानकर चलता है। समकालीन रचनाकार समाज की अनीति के साथ ही अच्छी बातों को भी जनता के सामने लाने का काम

करते हैं। समकालीन रचनाकार समाज के मानवीय चेतना पैदा करने का काम करते हैं बिना किसी स्वार्थ और स्वहित के। समकालीन कविता उत्तर आधुनिक विसंगतियों, स्त्री विमर्श, दलित, आदिवासी विमर्श, आदिवासी विमर्श, राजनैतिक विमर्श, वृद्ध विमर्श, बच्चा विमर्श, परिस्थिति विमर्श, सांप्रदायिक विमर्श, मीडिया विमर्श आदि प्रवृत्तियों के साथ गोचर होती हैं। अनामिका की गणना समकालीन साहित्यकारों के जिस श्रेणी में किया जाता है, वह श्रेणी स्त्रीवाद की प्रमुख वाणी है, जो मीरा, महादेवी वर्मा जैसी रचनाकारों की परंपरा को पूरा करती हुई, अपने ठोस प्रमाण के साथ एक अलग दर्ज कायम करती है। अनामिका की रचनाएं धर्मदर्शन, पौराणिक नीति तथा मानव चिंतन के परिणाम स्वरुप व्यक्त हुई हैं। इनमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक अनेक परिस्थितियों का उद्भव होता हुआ दिखाई देता है।

अनामिका की साहित्य की विशेषताएँ

अनामिका आजादी के बाद साठोत्तरी समय की रचनाकार है। बिहार प्रांत की सजगता और सामाजिक चेतना उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। अनामिका की रचनाओं में भावनाओं का समीकरण दिखाई देता है, जिसमें स्त्री पीड़ित जनों की पीड़ा, आम जनों की पीड़ा, बालकों की पीड़ा उनके द्वंद मुखरित रूप से अनामिका की रचना में अभिव्यक्त होता है। अनामिका अपनी साहित्यिक भाषा सहजता और सरलता के प्रयोग करके शैली के सभी मानदंडों को अपनी रचनाओं में स्थान देकर प्रकट करने को एक विशेष रूप से दर्शाने की कला रखते हैं। उनकी रचनाओं में अलंकार युक्त सरस काव्य में और मार्मिक शैली का प्रयोग दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में गंभीरता, तर्क युक्त चिंतन, आलोचना से परिपूर्ण भाषा शैली का प्रयोग दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में जहां समाज के प्रमाण पर प्रश्न दिखाई देता है तो वहीं उनके साहित्य में हृदय परिवर्तन की भाषा दिखाई देती है। अनामिका ने अपनी रचनाओं को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाने के लिए यथा स्थिति, संवाद, स्थान, दृश्य, वस्तु प्राकृतिक चित्रण को अधिक सरलता और संयोजकता के साथ व्यक्त किया है। अनामिका की भाषा में स्थान, अनुभव, प्रवेश को अधिक प्रबलता के साथ दिखाया गया है। वह वातावरण के निर्माण में अपनी सफलता के शिखर को पहुंचती दिखाई देती हैं। अनामिका ने अपने भाषा अभिधान से हिंदी साहित्य में वृद्धि की करती हैं। सामाजिक व राजनीतिक अवस्थाओं में मनुष्य नीति व कार्य प्रणाली का प्रतिपादन करके अनामिका अपने सपाट बयानी शैली से एक अलग तरह की भावनाओं को स्पष्ट करती दिखाई देती हैं। संवाद शैली की दृष्टि से भी देखा जाए तो उनकी काव्य साहित्य में खड़ी उतरती दिखाई देती हैं। अनामिका अपनी रचनाओं में विचार अभिव्यक्ति, यथार्थवादी मनोवृति से भाषा शैली को एक नया अवतार देती दिखाई देते हैं। अनामिका अपने रचना विधान के लिए आत्मकथात्मक वर्णनीय, भावनात्मक तथा मनोविश्लेषण आदि सभी शैलियों का प्रयोग करते दिखाई देती हैं। उनकी सभी शैलियों में समाज की पुरानी जर्जर हुई रूढ़िवादिता स्वार्थ हिता को वह गहरा प्रहार

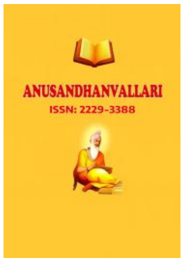

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

करती दिखाई देती है। अपनी भाषा को वह अपने अस्त्र के जैसे प्रयोग करते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में शहरीकरण को भी दिखाई तो वहीं देहाती भाषाओं को शब्दों को भी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। उनकी नवीन शैली के द्वारा ही उनकी भाषा में मौलिकता के साथ-साथ अंग्रेजी अरबी फारसी दक्षिण दक्षिण उत्तरी प्रदेश की बोलियां, देशी-विदेशी शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। अनामिका के सभी रचनाओं का अवलोकन करने के बाद अन्य साहित्यकारों में एक अलग स्थान प्रदान करता है। अनामिका अपने साहित्य में विस्तार और गहराई के साथ जिस प्रकार खड़ी दिखाई देती हैं, उसे समाज की कुरीतियों, अत्याचारों का विरोध कर उसमें एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हुई उनकी रचनाएं आज पाठकों के सम्मुख है।

जिस तरीके से प्राचीन काल से पुरुष लेखन करते आ रहे हैं। अब आधुनिक काल आते-आते स्त्रियाँ खुद के लिए सक्रिय होती जा रही हैं। स्त्रियाँ खुद के अकेलेपन को, शोषण को, मानसिक और शारीरिक स्थिति को, वर्णित करती अपनी रचनाओं में पुरुषों को कहीं पीछे धकेलती चली जा रही हैं। उनकी रचनाओं में अलग तरीके का स्व बिंदु होता है। जिस तरीके से स्त्री परिवार की धुरी होती है, बदलते परिवेश में पारिवारिक विघटन जारी है और स्त्री पुरुष के वर्चस्व की कहानी वर्णित होती जा रही है। उनके दमन शोषण की जो व्याख्या है, वह पुरुषों से कहीं ज्यादा विस्तृत और मौलिक होती है। स्त्री परिवार के विघटन को बहुत ज्यादा झेलती है। परिवार के टूटने का सबसे ज्यादा प्रभाव इन्हीं पर पड़ता है। स्त्री श्रम, शिक्षण हमारे सामाजिक व्यवस्था की एक सच्चाई है। स्त्री समाज के द्वारा बने सती प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, कन्या शिशु की हत्या, पर्दा व्यवस्था आदि अनेक अमानुषिक स्थिति से शोषित होकर बलात्कार, दहेज, तलाक आदि समस्याओं को सहती जा रही हैं। अपने निजी जीवन के अनेक पक्षों को देखते हुए वह एक सजक नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर होना चाहती है समाज में स्त्रियों को ऐसे मौके बहुत कम दिए गए हैं। उन्हें अगर जरा सा भी आरक्षण और सभी समाज में पहला दर्जा दिया जाता है तो यह बस बहस का मुद्दा बन जाता है। अनामिका का संवेदनात्मक लगाव स्त्रियों के प्रति बहुत गंभीर दिखाई देता है।

समकालीन परिदृश्य में अनामिका हिन्दी की एक सुप्रसिद्ध साहित्यकार है। जिनकी कविताओं में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्यों में आए बदलाव, सदियों से स्त्री की पीड़ा, अवहेलना, शोषण, तिरस्कार, उपेक्षित होने की व्यथा आदि की भाव भूमि है। वास्तव में हिन्दी साहित्य लेखन में स्त्री रचनाशीलता का मानचित्र केवल संबंद्ध विषयों की परिधि तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण समाज के विकास की भागिरदारी में भी सहयोग कर रहा है। एक स्त्री को सुशिक्षित बनाने का अर्थ है पूरे परिवार का वैचारिक, मानसिक, बौद्धिक परिष्कार करना द्य इसी संबंध में अनामिका ने अपनी कविताओं में स्त्री समाज के बारे में कहा है कि-स्त्री समाज एक ऐसा समाज है जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है। जहाँ चाहे जिस वर्ग, जिस आयु, जिस जाति, जिस नस्ल की हो त्रस्त है। अनामिका ने पूरे वृहत्तर समाज की गति और विडंबनाओं को एक स्त्री की संवेदनशील दृष्टि से देखा और परखा है।

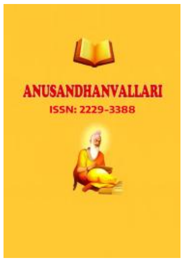

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

अनामिका के साहित्य में साठोत्तरी काल के साहित्य का हर एक विषय दिखाई देता है, चाहे वह स्त्री विषयक चेतना हो या वृद्‌ध जनों के जीवन का त्रास, बच्चों का समाज में अनदेखी हो या हासिए पर पड़े जन लोगों की बात हो सभी को अनामिका एक सूत्र में पिरो कर एक साथ अपनी रचनाओं में लेकर चलती हैं । अनामिका की गणना समकालीन साहित्यकारों के जिस श्रेणी में किया जाता है, वह श्रेणी स्त्रीवाद की प्रमुख वाणी है, जो मीरा, महादेवी वर्मा जैसी रचनाकारों की परंपरा को पूरा करती हुई अपने ठोस प्रमाण के साथ एक अलग दर्ज कायम करती है। अनामिका की रचनाएं धर्मदर्शन, पौराणिक नीति तथा मानव चिंतन के परिणाम स्वरुप व्यक्त हुई हैं। इनमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक अनेक परिस्थितियों का उद्‌भव होता हुआ दिखाई देता है। अनामिका आजादी के बाद साठोत्तरी समय की रचनाकार है। बिहार प्रांत की सजगता और सामाजिक चेतना उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। अनामिका की रचनाओं में भावनाओं का समीकरण दिखाई देता है, जिसमें स्त्री पीड़ित जनों की पीड़ा, आम जनों की पीड़ा, बालकों की पीड़ा उनके द्‌वंद मुखरित रूप से अनामिका की रचना में अभिव्यक्त होता है। अनामिका अपनी साहित्यिक भाषा को सहजता और सरलता के प्रयोग करके शैली के सभी मानदंडों को अपनी रचनाओं में स्थान देकर अभिव्यक्ति को एक विशेष रूप से दर्शाने की कला रखते हैं। उनकी रचनाओं में अलंकार युक्त सरस काव्य में और मार्मिक शैली का प्रयोग दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में गंभीरता, तर्क युक्त चिंतन, आलोचना से परिपूर्ण भाषा शैली का प्रयोग दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में जहां समाज के प्रमाण पर प्रश्न दिखाई देता है तो वहीं उनके साहित्य में हृदय परिवर्तन की भाषा दिखाई देती है। अनामिका ने अपनी रचनाओं को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाने के लिए यथा स्थिति, संवाद, स्थान, दृश्य, वस्तु प्राकृतिक चित्रण को अधिक सरलता और संयोजकता के साथ व्यक्त किया है। अनामिका की भाषा में स्थान, अनुभव, प्रवेश को अधिक प्रबलता के साथ दिखाया गया है। वह वातावरण के निर्माण में अपनी सफलता के शिखर को पहुंचती दिखाई देती हैं। अनामिका ने अपने भाषा अभिधान से हिंदी साहित्य में वृद्‌धि की करती हैं। सामाजिक व राजनीतिक अवस्थाओं में मनुष्य नीति व कार्य प्रणाली का प्रतिपादन करके अनामिका अपने सपाट बयानी शैली से एक अलग तरह की भावनाओं को स्पष्ट करती दिखाई देती हैं। संवाद शैली की दृष्टि से भी देखा जाए तो उनकी काव्य साहित्य में खड़ी उतरती दिखाई देती हैं। अनामिका अपनी रचनाओं में विचार अभिव्यक्ति, यथार्थवादी मनोवृति से भाषा शैली को एक नया अवतार देती दिखाई देते हैं। अनामिका अपने रचना विधान के लिए आत्मकथात्मक वर्णनीय, भावनात्मक तथा मनोविश्लेषण आदि सभी शैलियों का प्रयोग करते दिखाई देती हैं। उनकी सभी शैलियों में समाज की पुरानी जर्जर हुई रूढ़िवादिता, स्वार्थहितता पर वह गहरा प्रहार करती दिखाई देती है। अपनी भाषा को वह अपने अस्त्र के जैसे प्रयोग करते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में शहरीकरण को भी दिखाई तो वहीं देहाती भाषाओं को शब्दों को भी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। उनकी नवीन शैली के द्‌वारा ही उनकी भाषा में मौलिकता और मौलिकता के साथ-साथ अंग्रेजी अरबी फारसी दक्षिण दक्षिण उत्तरी प्रदेश की बोलियां, देशी-विदेशी शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। अनामिका के सभी रचनाओं का अवलोकन करने के बाद अन्य साहित्यकारों में एक अलग स्थान प्रदान करता है। अनामिका अपने साहित्य में विस्तार और गहराई के साथ

जिस प्रकार खड़ी दिखाई देती हैं, उसे समाज की कुरीतियों, अत्याचारों का विरोध कर उसमें एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हुई उनकी रचनाएं आज पाठकों के सम्मुख है।

अनामिका के शिल्पगत अध्ययन के फलस्वरूप उनमें संवाद योजना, वातावरण शैली विशेषताएं इत्यादि दिखाई देती हैं। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में संवेदना और शिल्पगत उपलब्धि की दृष्टि से अनामिका विशिष्ट योगदान देते हुए दिखाई देती हैं। अनामिका की भाषा में विद्या तथा शैली में प्रयोग रचना को रोचकता प्रदान करता है। निःसंदेह कहा जा सकता है कि अनामिका की रचनाओं में संवेदना और शिल्प की जो उपस्थित दिखाई देती है वह बेजोड़ है। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रश्न निर्माण, विचारों का बीजारोपण, समस्या का विकास और चरमोत्कर्ष के बाद उद्देश्य पूर्ति के साथ अपनी रचनाओं को महत्वपूर्ण बनाया है। अनामिका के अनुभवों ने उन्हें सशक्त लेखिका का स्थान प्रदान किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में आलेखन के लिए उन-उन क्षेत्र वातावरण, समाज के सभी बिंदु, पात्र-संवाद सभी को अपनी दृष्टिकोण से एक अलग पहचान दी है। उन्होंने वर्णनात्मक विश्लेषण, व्यंग्यात्मक शैली, आत्मक शैली भी अपनाया है। अनामिका की रचनाओं में शैली, प्रयोग विद्या भरपूर देखने को मिलता है। अनामिका के रचनाओं में मानव जीवन के बेहतर परिपेक्ष्य में बहुत उदाहरणों को स्पष्टता के साथ दिखती हैं। अनामिका की रचनाओं में मुख्य रूप से आधुनिक भारतीय स्त्री की आवाज मुखरित होती दिखती है। उनकी रचनाओं में जीवन के आस-पास के परिचय, बालको और वृद्धो की समस्याएँ, पर्यावरण की समस्याएँ, परिवार समाज का चित्रण, बदलते परिवेश से होने वाली समस्या और जीवन के घटते मूल्य के प्रश्नों को जिस सूक्ष्मता के साथ दिखाया और वर्णित किया जाता है वह अनामिका को सर्वोपरि लेखिका रचनाकार के रूप में अंकित करने के लिए पूर्ण है।

अनामिका की रचनाओं में जीवन के हर पहलू पर चुटकुले, सवाल, जीवन मूल्य सभी उनके शब्द बन जाते हैं। अनामिका अपने संपूर्ण मूल्यांकन की वजह से अपनी रचनाओं में रोचक तथ्य और प्रभावपूर्णता बनाने के लिए स्थिति, संवाद, दृश्य, प्रकृति चित्रण, पात्रों के चरित्र को पाठकों के सामने लाती हैं। भाषा विधान से अनामिका हिंदी शब्दकोश साहित्य में वृद्धि करती है। शैली, प्रवृत्ति, अलंकार, देशी शब्दों का भरमार है उनकी रचनाओं में, जो कि पात्रों के मनः स्थिति को वर्णित करती है। अनामिका की कवितायेँ मध्यमवर्गीय स्त्री के दुखों का, दर्द का बयान भर नहीं है बल्कि वहाँ एक आधुनिक भारतीय स्त्री को अपने भीतर की खिड़की से बहकर आता संगीत सुनाई देता है। मोहक रूप से अपने इच्छाओं को, बेताबियों को दिखाता पाठक अपनी तरफ खींचता है द्य किसी स्थान की सामाजिक और राजनीतिक अवस्थाएँ ही व्यक्ति की मान्यताओं, विचारों और भावनाओं को समझने का आधार प्रदान करती हैं जिससे परिवर्तन का होना आवश्यक होता है। परिवर्तन की गति प्रगति की सोच को विकसित कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। अनामिका इसी उन्नति के मार्ग को समृद्ध कर अपनी रचनाओं को विकसित करती हैं। अनमिक अपनी रचनाओं में रोचकता और प्रभावता लाने के लिए यथा स्थिति, संवाद, स्थान, वस्तु, दृश्य और प्राकृतिक चित्रण को अधिक मात्र में प्रयोग करती हैं। अनामिका वातावरण निर्माण में सफलता की शीर्ष बिन्दु की ओर पहुँचती हैं। अनामिका ने अपनी

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

भाषा अभिधान से हिन्दी साहित्य कोष में वृद्धि की हैं। अनामिका की रचनाओं का आकर्षक बिन्दु है। संवाद शैली यदि अनामिका के साहित्य को आँका जाए तो काव्य साहित्य उस पर पूरी तरह से खरा उतरता है। समाज के सभी छूए और अनछुए पहलूओं को वे अपने रचना में स्थान देती हैं। समाज में जो भी कुछ अनामिका ने देखा भोगा और अनुभव किया सब कुछ वे अपनी रचना का विषय बना देती हैं जो उन्हें एक श्रेष्ठ रचनाकार की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। समकालीन साहित्यकारों में जिस श्रेणी में अनामिका की गड़ना की जाती है, वह श्रेणी स्त्रीवाद की मुखर वाणी है। अनामिका आजादी के बाद की सठोत्तरी की रचनाकार हैं। अनामिका के साहित्य में अभियुक्त पुरानी अस्मिता का ठहराव आधुनिक समय की गति को अवरोध का प्रभाव नहीं बल्कि मानव समूह की सदस्यता का प्रमाण देती दिखाई देती है। इस प्रकार कहा जाए तो अनमिका के रचनाओं में संवेदनाओं का विस्तार और गहराई दिखाई पड़ती है। समाज के सभी छूए और अनछुए पहलूओं को वे अपने रचना में स्थान देती हैं। समाज में जो भी कुछ अनामिका ने देखा भोगा और अनुभव किया सब कुछ वे अपनी रचना का विषय बना देती हैं जो उन्हें एक श्रेष्ठ रचनाकार की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। समाज के अनेक संकीर्णताओं को अनामिका एक नई दिशा व सोच प्रदान करती हैं।